जय श्री राम

(१) आज अपनी हकीकत की क्यों न एक
पहचान हो जाए |
खुद की डूबती कश्तियों के नाम एक
शाम हो जाए ||

(२) खुद को जीने का मन करता है अब
मुद्तो बाद
ये सुबह भी न शाम तक करार हो जाए

(३) आज दिल में जो है वो लिख दूं
तो कैसा हो,
सरेआम आज वजूद कर दू तो
तो कैसा हो .....

(४) देर हो गयी है बहुत यार ये सोचकर
टूंट चुके है
फिर भी अपने कदमों को जमानत पर
रिहा कर दू तो कैसा हो....

(५) तेरे आने का इन्तजार कुछ यूं
रहा हमको
एक हमदर्द को हो दर्द पर एतबार जैसे....

(६) सुन - ए हवा आज हम एक नया
ऐलान करते है,
खुद को गिरवी न रखेंगे ज़माने के
शोर से

(७) बदलना पड़ेंगा खुद को नहीं तो
हम खाक हो जाएंगे,
राख होने से पहले शोलो को खाक
कर जाएंगे

काश कि इस ख्याल से हम
उभर आए कि,
जिन्दगी के कदमों में घुंघरू
हमने बांधे है |

शिवभूषण शरण सिंह
“शिवसिंह आर. राजपूत”
(BA SEM – 6)